आर्य और द्राविड

मूल संस्कृत लेखक—
श्री डॉ. विश्वमित्र, सिद्धान्तविशारद

अनुवादक—
श्री यज्ञमित्र शर्मा

[आर्य और द्राविड समस्या आजकी एक बडी भारी समस्या है । क्योंकि द्रविड मुन्नेत्र कषगमके रूपमें अस्तित्वमें आया हुआ एक राजनैतिक दल पिछले अनेक वर्षोंसे अपना एक अलग ' द्रविडस्थान ' लेनेके स्वप्ने देख रहा है । उनका कथन यह है कि सदासे आर्य और द्राविडके रूपमें दो पृथक् जातियां रहीं हैं, उनकी संस्कृति और सभ्यतायें भिन्न भिन्न रही हैं, अतः आज उनका एकीकरण किस तरह हो सकता है ? पर उनकी यह युक्ति सर्वथा थोथी है । वस्तुतः आर्य और द्राविड एक ही जाति है, यह भी कहा जा सकता है कि ये दोनों एक दूसरेके पर्यायवाची हैं । विद्वान् लेखकने आर्य और द्राविडकी भिन्नताको दूर करनेकी भरपूर कोशिश की है । लीजिए, आपके समक्ष भी उनके विचार प्रस्तुत हैं—

सम्पादक]

आर्य और द्राविड विषयक तथ्यका ज्ञान आजकी एक महान् आवश्यकता है, क्योंकि अनेक स्वार्थसाधकोंने इस विषयमें मतभेद खडा करके देशोन्नतिमें अनेक बाधायें उत्पन्न कर दी हैं । आशा है कि यह लेख उनके ज्ञानचक्षु खोलनेमें सहायक होगा । इस वाद-विवादका उद्भव तब हुआ, जब कि हम स्वार्थसाधक और कपटी विदेशियोंके अधिकारके अन्तर्गत हो गए । उन्हींके द्वारा आर्य द्राविडके मध्यमें लगाई गई मतभेद रूपी चिनगारी आज दावानल बन कर सारे देशको भस्मसात् करनेके लिए उद्यत है । इसलिए हमारा कर्तव्य है कि इस विषयपर कूलंकष रूपसे विचार कर इसके सत्य अंशको जनताके सामने हम रखें और इस प्रकार उनके मतभेदोंको दूर कर देशहितकी सिद्धि करें ।

आर्य और द्राविड ये दोनों शब्द संस्कृतभाषामें अज्ञातकालसे हैं । परन्तु इनमें द्वन्द्वबीज तो आंग्लशासकों द्वारा, जो यहां भारतीय प्रजाओंमें फूट पैदा करके शासन करने आये थे, बोया गया था । इतिहास लिखनेके लिए भी जिन इतिहासज्ञोंको नियुक्त किया था, उन्होंने भी अज्ञानता अथवा स्वार्थवश तथ्योंको तोडमरोड कर बिल्कुल ही विकृत बना दिया । क्योंकि यह एक राजनीतिक दांवपेच है कि जिस देशका स्वाभिमान नष्ट करके उसपर शासन करना हो, तो सर्वप्रथम उसके इतिहासको नष्ट अथवा भ्रष्ट कर दिया जाए । इसलिए विदेशीशासकोंने भी हमारे इतिहासमें जो उज्ज्वलतम और गम्भीरतत्व थे, उन्हें तोड मरोडकर उनके स्थानमें मिथ्या तत्त्वोंको प्रस्तुत किया । ' पाषाणयुगके लोग ' अथवा ' लौहयुगके लोग ' आदि सभी कथनोंसे विदेशी इतिहास लेखक यह दिखाना चाहते थे कि भारत देशमें पहले केवल असभ्य और जंगली ही रहते थे । पर आर्यसमाजके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जीने हमारे सत्य इतिहासको दिखाया । उन्होंने लोगोंको यह भी बताया कि हमारी सभ्यता, जो प्राचीनकालमें बहुत ऊंची थी, बराबर गिरती चली जा रही है । उन्होंने यह भी बताया कि आदिसृष्टि अमैथुनी थी । सर्वज्ञ परमात्माके सामर्थ्यसे सृष्टिकी आदिमें सब मनुष्य स्त्रीपुरुष सहित यौवनावस्थामें उत्तम बुद्धि, बल, और आरोग्यादि सम्पत्तिसे युक्त उत्पन्न हुए थे ।

इस संसारमें सुखसे यात्रा करनेके लिए जो जो ज्ञान आवश्यक थे, उन सबको सार्वभौम, सार्वकालिक और सर्वकला सम्पूर्ण ' वेदों ' के रूपमें सर्वज्ञ परमात्माने दिया । प्राचीन आर्योंकी संस्कृति व सभ्यता अत्यन्त उन्नत अवस्थामें थी । उनकी सर्वसामान्य संज्ञा ' आर्य ' अर्थात् श्रेष्ठ थी । क्योंकि वे सब ' अर्य ' अर्थात् श्रेष्ठस्वामी परमात्माकी श्रेष्ठ सन्तान थे । यास्काचार्य कहते हैं— ' आर्यः ईश्वरपुत्रः ' अर्थात् आर्य ईश्वरका पुत्र होता है । वेदोंमें भी इस कथनका आधार पाया जाता है—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शृण्वन्तु विश्वेऽमृतस्य पुत्राः ॥ ऋ. १०।१३।१

\+ × ×

अज्येष्ठासोऽकनिष्ठास एते

संभ्रातरः वावृधुः सौभगाय ॥ ऋ. ५।६०।५

' हे मनुष्यो ! तुम सब मुझ अमरकी शाश्वतसन्तान हो। तुममें कोई भी छोटा बडा या ऊंच नीच नहीं है। सब भाईबहिनके रूपमें समान होकर सौभाग्यके लिए आगे बढो। '

डार्विनका विकासवाद बिल्कुल आधारहीन और खोखला है। उसके इस सिद्धान्तका तो कई विदेशी मनीषियोंने भी खण्डन किया है। एक प्रतिष्ठित लेखकने अपने Return to Nature (प्रकृतिकी ओर प्रत्यागमन) नामक ग्रंथमें लिखा है कि ' मनुष्य, जो उस महान् देवका अत्यल्प प्रतीक है, सृष्टिकी आदिमें पाप-रहित, रोग-रहित एवं दुःख और कष्टसे रहित था। '

बाइबिलमें भी ' आदम और हव्वा ' के अलंकारके रूपमें यही बात बताई गई है कि आदि मनुष्य सर्वैश्वर्य सम्पन्न था। ×

' आर्य ' शब्दका अर्थ श्रेष्ठ है। श्री अरविन्दघोषने भी आर्यशब्दके महत्त्वको इस प्रकार दिखाया है–' आर्यशब्द एक नैतिक और सामाजिक आदर्शका द्योतक है। तथा विजय, धैर्य, स्थैर्य, गांभीर्य, औदार्य, सरलता, सामाजिक नियम रक्षण शीलता, ज्ञान पिपासा, कार्यकुशलता आदि गुणोंका भी निदर्शक है। इससे बढकर गंभीर शब्द दुनियाके किसी भी भाषाके वाङ्मयमें नहीं है। '

व्याकरणके अनुसार भी गत्यर्थ ' ऋ ' धातुसे ' अर्य ' शब्द सिद्ध होता है। ' गतेस्त्रयोर्थाः ज्ञानं, गमनं प्राप्तिश्चेति ' अर्थात् गतिके ज्ञान, गमन और प्राप्ति ये तीन अर्थ होते हैं। अर्य शब्दसे आर्य बना है।

अब ' द्रविड ' शब्दकी भी निष्पत्ति देखें। ' द्रमिल ' और ' द्रमिड ' दोनों शब्द समान हैं। संस्कृतमें ' ळ ' ' ल ' और ' ड ' में कोई भेद नहीं होता, जैसे- अग्निमीळे-ळ और अग्निमीडे—

' द्रमिल ' शब्द भी ' द्रमु गतौ ' धातुमें ' इलच् ' प्रत्यय लगानेसे सिद्ध होता है। ' द्रविड ' शब्द ' द्रमिड ' शब्दका अपभ्रंश है, अथवा ' द्रु गतौ ' इस धातुसे भी ' द्रविड ' शब्दकी सिद्धि मानी जा सकती है। ' द्रु+इलच् द्रविल या द्रविड और द्रविडस्यापत्यं द्राविडः। इस प्रकार ' आर्य ' शब्दके समान ' द्राविड ' शब्द भी गत्यर्थक धातुसे ही बना है। अतः दोनों शब्द समानार्थक और पर्यायवाची हैं।

अब ' तमिळ ' शब्दकी निष्पत्ति देखें। ' तमु कांक्षायां ' (चाहना) इस धातुमें ' इलच् ' प्रत्यय लगानेसे ' तमिळ ' शब्दकी सिद्धि होती है। मनुष्य तो अत्युत्कृष्ट वस्तुको ही चाहता है। और वह अत्युत्कृष्ट वस्तु ज्ञान ही है। क्योंकि परमात्मा ज्ञानस्वरूप है। ' गति ' के अर्थोंमें ज्ञान भी शामिल है। इसलिए ' तमिळ, द्रामिल-द्राविड, और आर्य ये सभी शब्द समानार्थक होनेसे पर्यायवाची हैं।

यह सब जानते हैं कि आर्य शब्द वेदप्रतिपादित है। तमिलनाडमें उत्पन्न सुप्रसिद्ध कवि, तार्किक केसरी श्री तुप्पलवेदान्त देशिकर, जो सायणाचार्यके बडे भाई विद्यारण्यके सहपाठी थे, द्राविडके विषयमें ' द्रमिडोपनिषद् तात्पर्यरत्नावली ' नामक काव्यमें लिखते हैं—

आदौ शारीरिकार्थक्रममिह विशदं विंशतिर्वक्ति साम्रा
संक्षेपोऽसौ विभागं प्रथयति ऋचां चारुपाठोपपन्नाम्।
सम्यक् गीतानुबद्धं सकलमनुगतं सामशाखासहस्रम्
संलक्ष्य साभिधेयैर्यजुरपिशतकैर्भात्यथर्वारसैश्च ॥

अर्थात् यह ' द्रमिडोपनिषद् ' ऋक्, यजु, साम और अथर्व इन चारों वेदोंसे निःसृत हुई है तथा शारीरिक दर्शन, गीता आदि शास्त्रोंका भी अनुसरण करती है '।

इससे विद्वान् समझ सकते हैं कि द्राविड और आर्य शब्द विवादोत्पादक और द्व्यर्थक शब्द नहीं है। अपितु समानार्थक पर्यायवाची हैं, क्योंकि ये दोनों समानार्थक धातुओंसे उत्पन्न हुए हैं। न तो द्राविड दक्षिणके आदिवासी हैं और नाहीं आर्य उत्तरसे आये हुए विजेता। आंग्ल इतिहासज्ञोंके कथन तो आधारहीन प्रतीत होते हैं। पवित्र और आत्माको विकसित करनेवाले अर्थको नष्ट कर विदेशी और उनके अनुगामी भारतवासी भी अन्धोंके पीछे चलते

\+ तुलना करें, (१) महर्षिका कथन, (२) Return to Nature के लेखकका कथन (३) बाइबिलका आख्यान।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुए, उन्हींके रागको अलापते हुए, परस्पर द्वेष और भेद-भाव उत्पन्न करते हुए देशको नाशकी तरफ ले जा रहे हैं।

कतिपय विचारकों की ऐसी भी धारणा है कि रावण द्राविड सभ्यताका स्थापक था। पर यह रावण था कौन यह विचारणीय है? रावणका दूसरा नाम दशकण्ठ भी है। अर्थात् चार वेद और छहों शास्त्र उसको कण्ठस्थ थे। वह वेदवेत्ता और ऋषि पुलस्त्यका पौत्र था। यह सब जानते हैं। रामायणमें ऐसा भी आया है कि हनुमान्ने लंकामें लोगोंको प्रतिदिन घरमें अग्निहोत्र करते हुए देखा था, इसके अलावा रावण शब्द ही 'रा दाने' (दान देना) धातुसे सिद्ध हुआ है। रावणने वेदों पर भी भाष्य किया था, ऐसा भी ऐतिह्य है। ये सब यह बताते हैं कि रावण आर्य्य था। यदि वह आर्य था तो वह सभ्यता भी, जिसका प्रचलन व प्रसार उसने किया था, निश्चयसे आर्यों की ही होनी चाहिए। अतः द्राविड सभ्यता भी, जिसका संस्थापक रावण कहा जाता है, आर्योंकी सभ्यता ही थी। इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि द्राविड और आर्य शब्द समानार्थक व पर्यायवाची हैं।

द्रविड सभ्यताकी मूल भाषा 'तमिल' अगस्त्य मुनिके द्वारा अस्तित्वमें लाई गई थी, ऐसा भी इतिहास है। महर्षि अगस्त्य वैदिक ऋषि थे। इसलिए वे भी आर्य थे। फिर एक आर्य होते हुए वे आर्यसंस्कृतिके विरुद्ध भाषाको प्रचलित कैसे कर सकते थे? यह पहले ही बताया जा चुका है कि तमिल शब्द भी संस्कृत है और आर्यका पर्यायवाची है।

इसके अलावा द्राविड लोगोंके 'पिल्लै, मुदलियार नायडू, अय्यंगार, अय्यर आदि उपनाम भी उनके आर्यत्व के द्योतक हैं। अब हम इन उपनामों पर विचार करते हैं—

तमिल भाषाभाषी जानते ही हैं कि तमिलमें 'पिल्लै' शब्दका अर्थ सन्तान होता है। तो जब किसी मनुष्यके नामके पीछे 'पिल्लै' लगा रहता है, तो उससे यह ज्ञात होता है कि वह किसीकी सन्तान है। पर किसकी? निश्चयसे परमात्माकी। और परमात्माकी सन्तान आर्य ही होगी।

'मुदलियार' शब्द 'मुदलयार' शब्दका अपभ्रंश है। इस शब्दका अर्थ है 'प्रथम कौन'? प्रथम तो केवल आर्य ही हो सकता है।

इसी प्रकार तेलुगु भाषाका 'नायडू' शब्द भी 'नायकडू' शब्दका विकृतरूप है। 'नायकडू' शब्दका अर्थ तेलुगुमें भी 'नायक' ही होता है। नायक कौन होसकता है।? श्रेष्ठ या आर्य ही।

'अय्यंगार' शब्द 'अय्यं' और 'गार' इन दो शब्दोंके संयोगसे बनता है। इनमें 'गार' शब्द आदरार्थक है, जैसे 'अम्मंगार' (माताजी) । और 'अय्य' शब्द 'आर्य' का अपभ्रंश है, जिसका अधिकतर प्राकृत भाषामें प्रयोग होता है।

इसीप्रकार 'अय्यर' शब्द भी 'आर्य' का ही अपभ्रंश है। भगवान् रामचन्द्र आर्य थे। वाल्मिकी रामायणमें उन्हें कई स्थलों पर 'आर्य' के नामसे सम्बोधित किया गया है। उन्हीं आर्यका चरित्रचित्रण तमिळभाषाके कवि तथा द्रविड सभ्यतामें पालितपोषित महाकवि कम्बने किया। अब यह स्पष्ट है। कि यदि आर्य और द्राविड सभ्यतायें भिन्न भिन्न होतीं, तो महाकवि कम्ब एक आर्य जातिके नायक की ओर अपना आदर कैसे प्रकट कर सकते थे, अथवा उनका चरित्रचित्रण कैसे कर सकते थे?

संस्कृतभाषा तो आर्यसंस्कृति व सभ्यताकी पृष्ठवंश है। 'तमिळ' शब्द तो संस्कृत ही है। कोई भी भाषा संस्कृतके बिना जीवित नहीं रह सकती। 'तमिळ' भी इसका अपवाद नहीं है। उसमें न केवल लौकिक या व्यावहारिक भाषा ही अपितु धार्मिक पुस्तककी भाषा भी संस्कृतसमन्वित है। अस्पष्ट और अपभ्रंश रूपसे भी संस्कृतके शब्द तमिल भाषामें घुस गए हैं।

उपरोक्त विवेचनसे यह सहज साध्य है कि द्राविड और आर्यसभ्यता या संस्कृतिमें कोई भेद नहीं है। सिर्फ नामोंका ही फरक है। द्राविड और आर्यसभ्यताकी भिन्नताकी बात सर्वथा आधारहीन और तथ्यसे कोसों दूर है। यह तो उन आंग्लशासकोंके बुद्धिचातुर्यका परिणाम है जो 'फूट डालो और शासन करो' के सिद्धान्तके आधार पर हम पर शासन करने आए थे।

आशा है कि पाठक गण इस पर विचार करेंगे

[अन्य विद्वानोंसे भी निवेदन है कि वे भी इस विषय पर लेखनी चलायें। हम उनके लेखोंको आमंत्रित करते हैं—

सम्पादक]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA